International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2021; 3(1): 334-337
Received: 08-03-2021
Accepted: 12-04-2021

डॉ॰ जसवीर त्यागी
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी–विभाग, राजधानी कॉलेज, राजा गार्डन, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ॰ जसवीर त्यागी
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी–विभाग, राजधानी कॉलेज, राजा गार्डन, दिल्ली, भारत

छायावादी कवियों के पत्र–साहित्य में भावगत शैलियाँ

डॉ॰ जसवीर त्यागी

सारांश
किसी कार्य की सामान्य पद्धति रीति है, जबकि व्यक्ति–विशेष से संबंधित पद्धति शैली है। शैली में लेखक के व्यक्तित्व की प्रधानता और अभिव्यक्ति का विशिष्ट ढंग भी निहित होता है। साहित्यिक कृति अथवा कलात्मक वस्तु रचने का ढंग या तरीका। कला की रचना में जिन रीतियों और विधियों का उपयोग किया जाता है, वे कला की शिल्प–विधि के नाम से पुकारी जाती है। छायावादी कवियों के पत्र–साहित्य में शिल्प और शैली का अध्ययन एक व्यापक, विस्तृत क्षेत्र है। शोध–आलेख की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए हम प्रस्तुत आलेख को 'छायावादी कवियों' के पत्र–साहित्य में भावगत शैलियाँ' पर केंद्रित कर रहे हैं।

कुटशब्दः पत्र, शैली, भाषिक सौंदर्य, युगीन परिवेश, सामाजिकता, साहित्यिकता, उद्देश्य।

प्रस्तावना
भावाभिव्यंजना की दृष्टि से अभिव्यक्ति की रीतियों को भाव–शैली या भावगत शैली के अंतर्गत रखा जाता है। भाव का संबंध एक ओर वर्ण्य–विषय से होता है और दूसरी ओर वे लेखक का निजी भावनाओं से संबंधित होते हैं। अतएव भाव–शैली अनेक रूपों में व्यक्त होती है। पत्र लेखक के मनोभावों का दर्पण होता है। किसी घटना, प्रसंग अथवा स्थिति के संबंध में किसी के हृदयगत भाव जानने हों तो उसके निजी पत्रों का अध्ययन करना चाहिए। प्राचीन पत्रों में भाव–वैविध्य कम मिलता है। छायावाद तक आते–आते पत्र–साहित्य पर्याप्त रूप में विकसित हो चुका था। अतः छायावादी कवियों के पत्रों में भावगत शैलियों में विविधता मिलती है। जो इस प्रकार हैं –

आत्मविश्लेषणात्मक शैली
आत्मविश्लेषणात्मक शैली में लेखक 'स्व' का विश्लेषण और परीक्षण करता हुआ दृष्टिगत होता है। पत्र–साहित्य का मुख्य उद्देश्य आत्म–प्रकाशन और आत्मजीवन की व्याख्या करना है। अतः इसमें लेखक के आत्म–विश्लेषण की अभिव्यक्ति होती है। आत्माभिव्यक्ति छायावाद की प्रमुख विशेषताओं में एक है। यह प्रवृत्ति उनके पत्रों में भी पायी जाती है। सुमित्रानंदन पंत कुँवर सुरेश सिंह को पत्र लिखते हुए आत्मविश्लेषणात्मक शैली अपनाते हैं – "आपसे स्नेह के लिए मेरे अन्तरतम हृदय में बड़ा सम्मान है। आपके मेरे बीच में कभी मिसअण्डरस्टैडिंग नहीं आये, सदैव इसका प्रयत्न करूँगा। आप मेरा स्वभाव जानते हैं, मैं अण्डरस्टैण्ड करने में विश्वास रखता हूँ – यह दूसरी बात है कि कभी बाहर की परिस्थितियों में तीव्र प्रतिघात पाकर हृदय अवसन्न हो जाता है उस समय मेरा दृष्टिकोण धुंधला हो जाता है। इसीलिए कभी–कभी मैं अपने अत्यंत हितैषी और स्नेहियों से भी विरक्त हो जाता हूँ। यह छिपाने की बात नहीं – यह मेरी दुर्बलता है।"[1]
महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने डॉ॰ रामविलास शर्मा को लिखे अपने 2.2.1943 के पत्र में स्वयं के संप्रेषण की अभिव्यक्ति कुछ इस तरह से की है – "अपने आप दिन–रात जलन होती है। किसी से अपनी तरफ़ से प्रायः नहीं मिलता। मिल नहीं सकता। कोई आता है तो थोड़ी–सी बातचीत। आने वाला ऊब जाता है। मुझे भी बातचीत अच्छी नहीं लगती। कभी रात–रातभर नींद नहीं आती। तम्बाकू छूटती नहीं। खोपड़ी भन्नाई रहती है।"[2]
पं॰ मोहनलाल महतो वियोगी डॉ॰ रामशंकर द्विवेदी को आत्मविश्लेषणात्मक शैली में पत्र भेजते हुए कुछ इस अंदाज़ में स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं – "जीवन के 66 सुवासित बसंत देख चुका हूँ। मन भर गया है, चित विश्राम की ओर झुकता है, वह हलचल से भागता है। यह अवस्था है। यों तो जैसा मैं 30 की उम्र में था आज भी वैसा हूँ। नित्य खूब व्यायाम करता हूँ, दिन भर स्वाध्याय में लगा रहता हूँ। सारी इन्द्रियाँ आज्ञाकारिणी हैं। कभी बीमार नहीं पड़ता। शरीर की मांसपेशियाँ ज्यों–की–त्यों हैं, एक भी दाँत नहीं टूटा है और आँखें तो पहले से भी ज़्यादा सतेज हैं और शरीर का वजन है 2 मन 13 सेर।"[3]
'प्रसाद के नाम पत्र' में कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद का आत्मविश्लेषणात्मक शैली में लिखा गया पत्र उनके व्यक्तित्व के कई अनदेखे पक्षों पर प्रकाश डालता है।[4]
इससे स्पष्ट है कि छायावादी कवियों के पत्रों में आत्मविश्लेषणात्मक शैली के अनेक सुंदर उदाहरण भरे हुए हैं।

आत्मचिंतन शैली

आत्मचिंतन शैली में व्यक्ति अपने ही विचार–व्यवहार और योजना, नीति पर विचार करता है। पत्र–साहित्य में यह शैली सहज सरलता से उपलब्ध हो जाती है। रामनाथ 'सुमन' के नाम प्रेषित छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा के पत्र का निम्न अंश द्रष्टव्य है – "कवियों में मुझे जबर्दस्ती सम्मिलित कर मेरा उपहास न कराइए। न मैं कवि हूँ, न मेरा प्रलाप कविता है, और यदि आपके विचार में मैं अपने साथ न्याय नहीं करती तो जब मेरा नाम मात्र शेष रह जाए, तब आप जितना चाहें न्याय कर सकते हैं। जब मनुष्य नहीं रहता तभी उसके जीवन का मूल्य आंका जा सकता है।"[5]

निराला के लिखे अनेक पत्रों में आत्मचिंतन शैली के दर्शन होते हैं। आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री को एक पत्र में लिखते हैं – "मुझे अपनी चीज़ों की अनुकूलता–प्रतिकूलता बहुत कम अनुकूल–प्रतिकूल कर सकती हैं : यों दूसरों की तरह कमज़ोरियाँ मुझमें भी हैं, क्योंकि दूसरों की तरह आमदी मैं भी हूँ।"[6]

रामेश्वर शुक्ल अंचल ने भी अपने पत्रों में आत्मचिंतन शैली का मुक्त प्रयोग किया है – "आप कहते हैं, 'उपेक्षायें अमरता को नहीं मार सकती'– पर वे जीवन को तो मार ही डालती हैं। मुझे तो कम–से–कम जीवित ही मृतवत, पस्त और परास्त किये हैं। हौंसला बांधने की चेष्टा करता हूँ – विश्वास तो है, मेरी रसधर्मी जिजीविषा मुझे असमय मरने न देगी।"[7]

कवि, साहित्यकार चिंतनशील होते हैं, उनके लिखे पत्रों में आत्मचिंतन शैली का प्रवाह होना स्वाभाविक है।

विनोदात्मक शैली

हँसना–हँसाना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। हास्य यानी ह्यूमर को मानवीय जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं में शामिल किया गया है। लेखक एक सामाजिक प्राणी है। वह सामाजिक सरोकारों से जुड़कर ही सफल बनता है। छायावादी कवियों के पत्रों में हास्य–विनोद के प्रसंगों की भी सफल अभिव्यक्ति हुई है। जिस प्रकार परस्पर वार्तालाप में हमें हँसी–ठिठोली का आनंद प्राप्त होता है, उसी प्रकार पत्र–साहित्य में भी यत्र–तत्र हास्य–विनोद के छींटे मिल जाते हैं। हरिवंशराय बच्चन के नाम लिखे सुमित्रानंदन पंत के पत्रों में 'विट' और 'ह्यूमर' की मात्रा सबसे अधिक है। आत्मस्थ–परस्थ दोनों ही हास्य–प्रकारों का सम्मिश्रण उनके पत्रों में मिलता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं – पंत जी बच्चन को पत्र में लिखते हैं – "मैं तो केवल डरपोक हूँ तुम बाहर से अपने को बहादुर दिखाते हो और भीतर से हनुमान चालीसा का पाठ करने वाले ठहरे। खैर ये बातें तुमने अपनी जीवनी में लिखी नहीं होगी।"[8] पंत जी के घर पर एक 'बिलाव' रहता था। वह उनका एक पारिवारिक सदस्य जैसा था। पंत जी के हृदय में प्रकृति से लेकर पशु–पक्षी तक के लिए प्रेम–भावना थी। बच्चन को लिखे अपने एक पत्र में वे लिखते हैं – "मेरा बन पुत्र होली में तुम्हें बहुत याद करता रहा। कहता था, चाचा जी होली मिलने नहीं आए। मैं पंजों से उनके मुँह पर गुलाल मलता। अब तगड़ा हो गया है। पूँछ फटकार तुम्हें चुनौती भेजता है, कि आओ, साहस हो तो मुझसे दो हाथ हो जाएं।"[9]

निराला के पत्रों में भी विनोदात्मक शैली का प्रयोग यदा–कदा हुआ है। आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखे अपने एक पत्र में निराला उन्हें अकबर और बीरबल का क़िस्सा लिखकर भेजते हैं।[10] जो निराला के विनोदात्मक वृत्ति का परिचायक है।

तर्कप्रधान या विवेचनात्मक शैली

पत्र–साहित्य में इस प्रकार की शैली वहाँ मिलती है जहाँ पत्र–लेखक किसी गंभीर विषय पर अपने विचार व्यक्त करता है। साहित्यकार जब किसी जिज्ञासु के द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर लिख भेजता है तो उसमें विशेषतः तर्कप्रधान या विवेचनात्मक शैली का प्रयोग मिलता है। मुकुटधर पाण्डेय आशुतोष पाडेय को विवेचनात्मक शैली में एक पत्र में लिखते हैं – "आपने अपने कार्ड में जिस पक्षी का ज़िक्र किया है, वह 'कुररी' नहीं हो सकता, क्योंकि आपके लेखानुसार वह प्रवासी पक्षी नहीं जान पड़ता। मेरी कविता में जिस 'कुररी' का उल्लेख हुआ है, वह प्रवासी पक्षी ;डपहतंजमक ठपतकद्ध विदेशी पक्षी है। मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़ अंचल के महानदी के तटीय प्रदेशों में जाड़े के दिनों में सैकड़ों की संख्या में झुंड के झुंड अनवरत कुर्र–कुर्र ध्वनि करते हुए देखे जाते हैं। वे प्रायः पंक्तिबद्ध उड़ते हैं जिससे ऐसा जान पड़ता है मानो आकाश में स्तम्भहीन तोरण बँधा हो। वे शरद ऋतु के आरंभ में आते हैं और शिशिर के अंत तक होते चले जाते हैं, कहाँ से आते हैं और कहाँ चले जाते हैं, इसका पता नहीं चलता।"[11]

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने अपने पत्रों में विवेचनात्मक शैली का खूब प्रयोग किया है। जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखे पत्रों में उनकी यह विशेषता द्रष्टव्य है – "कालिदास और श्री हर्ष के संबंध में आपने ठीक लिखा है। कभी मैंने भी इन्हें कुछ–कुछ पढ़ा था। समय नहीं कि दोनों की सौंदर्य–दृष्टि पर लिखूँ। दोनों महान हैं : पर श्री हर्ष का प्रभाव अधिक स्थायी होता है। फिर भी कला की जानकारी कालिदास को अधिक है।"[12]

निराला के पत्र में 11.2.36 को निराला ने एक लंबा पत्र जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखा। संभवतः यह पत्र–संग्रह का सबसे लंबा पत्र है। इस पत्र में उन्होंने संस्कृत साहित्य की गंभीर विवेचना की है। निराला का यह पत्र विवेचनात्मक शैली का श्रेष्ठ प्रमाण है।

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल ने भी अपने पत्रों में तर्कप्रधान या विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया है। जीवन प्रकाश जोशी को लिखे एक पत्र में 'अंचल' जी महादेवी वर्मा के विषय में लिखते हैं – "महादेवी जी की स्थिरतागत उपलब्धि सचमुच अपने ढंग की है। पर 'दीपशिखा' को तो सतत् जलते रहने के लिए ज्वलन सामग्री चाहिए। मुझे लगता है कि देवी जी ने यह पूरी तरह ईमानदारी से अनुभव किया कि वे चुक गयी हैं, और अधिक लिखना अपनी चिरस्थापित काव्य–छवि को बिगाड़ना ही है। जिस दिन कवि यह अनुभव करने लगे उसी दिन से उसे काव्य–प्रणयन बंद कर देना चाहिए।"[13] साहित्यकारों के इन पत्रों द्वारा उनके दृष्टिकोण एवं साहित्य के अनेक पक्षों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

चित्रात्मक शैली

इसमें वर्णनात्मक शक्ति इतनी समर्थ रहती है कि वह पाठकों के समक्ष साम्य तथा सादृश्यमूलक उपमा, रूपकादि के द्वारा एक शब्द–चित्र उपस्थित कर देती है। इससे वर्णन में सजीवता एवं प्रभावोत्पादकता आ जाती है। छायावादी कवियों के पत्रों में चित्रात्मक शैली के उदाहरण भी देखे जा सकते हैं। जैसे पं॰ मोहनलाल महतो वियोगी डॉ॰ रामशंकर द्विवेदी को एक पत्र में लिखते हैं – "मेरा घर छोटी–सी पहाड़ी की चोटी पर है। सारा गया शहर नक्शे की तरह मेरी खिड़की के नीचे फैला हुआ है। रात का सन्नाटा जैसे बोल रहा है। चारों ओर पहाड़ियाँ हैं, ऊपर नीला आसमान है और आज आश्विन कृ. प्रतिपदा का निर्मल चाँद मुस्करा रहा है। सर्वत्र निद्रा का साम्राज्य है और मैं यह पत्र टाइप कर रहा हूँ। कितनी खूबसूरत है यह दुनिया।"[14]

रामशंकर द्विवेदी को 25.12.64 के लिखे पत्र में भी मोहनलाल महतो वियोगी ने चित्रात्मक शैली का सुंदर प्रयोग किया है। 'प्रसाद के नाम पत्र' में विनोदशंकर व्यास का जयशंकर प्रसाद जी को चित्रात्मक शैली में लिखा यह पत्र द्रष्टव्य है – "यहाँ पर आपकी बहुत याद आती है, सायंकाल के समय कोई दिन ऐसा नहीं कि आपका ध्यान न रहता हो। आँसू की लाइन गुनगुनाया करता हूँ। यहाँ न कोई मित्र है न साथी, इस निर्जन प्रांत में

केवल पक्षियों का कलरव, सामने हरियाली, पीले सरसों के खेत, मटर के रंगबिरंगे फूल ही बड़े प्रिय मालूम पड़ते हैं।"[15] चित्रात्मक शैली छायावाद की मुख्य विशेषता है। छायावादी कवियों ने काव्य के साथ–साथ पत्र–लेखन में भी इसका समुचित प्रयोग किया है।

व्यंग्यात्मक शैली

व्यंग्य का मूल असंगति में है। एक विसंगति जब पत्र–लेखक को खिजाती है, उसके मूल्य–बोध पर चोट करती है, तब वह अपने पत्रों में उस पर व्यंग्य करता है। उसकी भाषा में कभी आक्रोश होता है, और कभी हल्का–फुलकापन। पाठक को उसकी शैली आनंद प्रदान करती है, और समय–विशेष पर विचार करने के लिए विवश भी करती है।

पत्र–साहित्य में हमें जिस व्यंग्यात्मक शैली के दर्शन होते हैं उसमें लेखक व्यंग्यकार के रूप में प्रकट नहीं हुआ है, वहाँ व्यंग्यात्मक शैली प्रसंग के अनुकूल आयी है। समाज की कमजोरियों, करनी और कथनी के अंतरों पर प्रहार करने की प्रवृत्ति छायावादी कवियों के पत्रों में भी पायी जाती है। हँसते–हँसते व्यंग्य करने की कला सुमित्रानंदन पंत बखूबी जानते हैं 'बच्चन के नाम पंत के दो सौ पत्र' शीर्षक पुस्तक में व्यंग्यात्मक शैली के अनूठे उदाहरण मिलते हैं। सरकार पर व्यंग्य करते हुए पंत लिखते हैं – "दूसरी बात यह है कि एम॰पीज॰ में महादेवी, राजकुमार, भगवती बाबू का नाम नहीं निकला। डॉ॰ बी॰एन॰ प्रसाद हो गये। इससे हिंदी के प्रति सरकार का प्रगाढ़ प्रेम ही प्रदर्शित होता है।"[16]

एक अन्य पत्र में वर्तमान युग की विषमता पर करारा व्यंग्यात्मक चित्र इन शब्दों में अंकित किया गया है : "यहाँ दो–तीन दिन खूब पानी बरसा धरती अब तृप्त है – पर सुना है कि अब बोने को बीज नहीं है। कुछ तो लोग निराशा में खा गये हैं – कुछ सरकारी अफ़सरों के पेट में गए।"[17] कभी–कभी सुमित्रानंदन पंत स्वयं पर भी व्यंग्य करने से चूकते नहीं है। बच्चन को पत्र में लिखते हैं – "कठिन काव्य का प्रेत लोकायतन कैसा चल रहा है?"[18] निराला के पत्रों में भी व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। मानसिकता के कारण पिछड़े लोगों पर निराला व्यंग्य करते हैं – "जमाना जितना बढ़ता जाता है, लोगों की बुद्धि उतनी मंद होती जाती है।"[19] निराला स्वास्थ्य को लेकर खुद पर ही व्यंग्य करते हैं, "अफसोस! हम भी मरकर बचे। बहुत संभाली थी तंदुरुस्ती, फिर चूहे हो गये। वे तस्वीरें ही रह गई हैं।"[20]

इस प्रकार देखते हैं कि छायावादी कवियों के पत्रों में व्यंग्यात्मक शैली के अनेक सरस और सुंदर नमूने उपलब्ध होते हैं।

व्याख्यात्मक शैली

व्याख्यात्मक शैली में विश्लेषण, विवेचन, निरीक्षण–परीक्षण, तर्क तथा प्रमाण उपस्थित किये जाते हैं। इसमें लेखक का उद्देश्य दुरूह विषय को सरल और बोधगम्य बनाना रहता है। छायावादी कवियों ने यत्र–तत्र अपने पत्रों में व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। 'निराला के पत्र' पुस्तक में निराला ने जानकीवल्लभ शास्त्री को अनेक पत्रों में व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। शास्त्री को 12.8.37 के लिखे पत्र में निराला अपनी प्रसिद्ध कविता 'तोड़ती पत्थर' की व्याख्या करते हैं –

"कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई, स्वीकार
श्याम तन, भर बँधा यौवन
नत नयन, प्रिय कर्मरत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ, करती बार–बार प्रहार :–
सामने तरुमालिका अट्टालिका, प्राकार।

यहाँ सीधा वर्णन होने पर भी, हथौड़े की चोट पत्थर पर पड़ने पर भी, देखिये, किस तरह अट्टालिका पर पड़ती है, लेखक के वर्णन–प्रकार के कारण और निर्देश से। ऐसी बहुत सी बातें इसमें है।

वह जहाँ बैठी है वह पेड़ छायादार नहीं, अट्टालिका तरु–मालिका। – अट्टालिका भी तरु–मालिका है, फिर आदमी कितनी छांह में है।

'बँधा यौवन' छलकता नहीं : कैसी पवित्रता है। 'मैं तोड़ती पत्थर' अंत का स्वभावतः शायद समझ में आयेगा : मैं तोड़ती पत्थर हृदय।"[21]

सुमित्रानंदन पंत ने भी अपने पत्रों में व्याख्यात्मक शैली को अपनाया है। वे बच्चन को एक पत्र में अपनी प्रसिद्ध कविता 'एक तारा' की व्याख्या कुछ इस तरह करते हैं – "शरद ऋतु, अपने नील अंचल में पीले गुलाब संजोए है – वे पीले गुलाब वास्तव में शरद के धुले नील अभ्रहीन व्योम में सूर्यास्त की पीली ज्योति है – पीले गुलाबों का नाम प्रायः ईवनिंग ग्लोरी – मैग्रेडीज सनसेट एटसेट्रा होता भी है। इसी से सूर्यास्त की पीत विभा पीले गुलाबों सी बताई गई है – वह कहीं कुम्हला न जाए अर्थात् सूर्यास्त की ज्योति रात्रि के आगमन के कारण अंधकार में विलीन न हो जाए, अंधेरे का आना, जैसे सूर्यास्त पीले गुलाब का मुरझाना ही 'एक तारा' में है।"[22]

'पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम' पत्र–संग्रह में पंत ने पत्र संख्या 92 से पत्र संख्या 105 तक के पत्रों में अपने महाकाव्य 'लोकायतन' की व्याख्या प्रस्तुत की है। निःसंकोच हम कह सकते हैं कि साहित्यकार कई बार अपने पत्रों में साहित्यिक रचनाओं की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

उपदेशात्मक शैली

पत्र–साहित्य में इस शैली को हम प्रायः बड़े व्यक्तियों द्वारा छोटे व्यक्तियों को लिखे पत्रों में उपदेशात्मक शैली के उदाहरण मिलते हैं। उनके पत्रों में उपदेश का स्वर अलग स्तर का है। कविवर सुमित्रानंदन पंत कुँवर सुरेश सिंह को एक पत्र में लिखते हैं – "राजा साहब से मेलजोल बढ़ाकर रहिएगा, आप उनसे बड़े हैं, उनसे गलती हो जाना बहुत ही स्वाभाविक है। पर आप केवल उनकी हित–चिंतना की भावना से उन्हें ठीक सलाह देते रहिएगा। आजकल की दुनिया में विरोध के कारण कैसा दानवी जीवन हो गया है, यह आपसे छिपा नहीं। खूब अच्छी तरह रहिए – प्रसन्न और सर्वहित भावना से।"[23] इसी तरह पं॰ मोहनलाल वियोगी अपने एक पत्र में डॉ॰ रामशंकर द्विवेदी को लिखते हैं – "आप साहित्य की सेवा करना चाहते हैं? ज़रूर कीजिये, ध्यान रहे कि खूब जमकर अध्ययन करना बंद मत कीजिए। चलती–फिरती चीज़ देना अब देश के लिए अहितकर होगा।"[24] जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखे निराला के पत्रों में कहीं–कहीं उपदेशात्मक शैली के दर्शन होते हैं – "जल्दबाजी अच्छी नहीं। धीरे–धीरे प्रसार होता है, विद्वता, अध्ययन और मननशीलता का।"[25]

छायावादी कवियों के पत्रों में समय–समय पर विविध प्रकार की उपदेशात्मक शैलियाँ उपलब्ध होती हैं। इन विशेषताओं के अलावा छायावादी कवियों की एक प्रमुख विशेषता और है, जिसका संबंध 'नवीन अभिव्यंजना प्रणाली' से है। छायावादी कवियों ने कविताओं के साथ–साथ इसका प्रयोग पत्र–लेखन में भी किया है। इस दृष्टि से पंत और निराला के पत्र विशेष उल्लेखनीय हैं। पत्रों में संबोधन प्रायः बायीं तरफ लिखा जाता है, लेकिन सुमित्रानंदन पंत निराला को लिखे पत्रों में संबोधन दायीं तरफ लिखकर नवीन प्रणाली का परिचय देते हैं।26 ऐसे ही अपने एक पत्र में पंत तिथि का उल्लेख '28–एक–29' लिखकर करते हैं। निराला अपने पत्रों में सिरनामा, संबोधन, अभिवादन, परिचय, हस्ताक्षर में नवीन अभिव्यंजना प्रणाली को अपनाते हुए दिखायी देते हैं। छायावादी कवि पत्र–लेखन में नीली, लाल, काली, हरी स्याही के प्रयोग

द्वारा भी अपनी इस विशेषता को उद्घाटित करते हुए देखे जा सकते हैं।

छायावादी कवियों के पत्रों में भावगत शैलियों का अनुशीलन करने के पश्चात्

निष्कर्षतः

यह कहा जा सकता है कि साहित्यकारों को अपनी साहित्यिक रचनाओं में भाषा, शैली आदि का सयत्न प्रयोग करना पड़ता है, किंतु पत्रों में साहित्यिकता स्वयंमेव प्रवेश कर जाती है। यही कारण है कि पत्र–साहित्य अन्य साहित्यिक कृतियों से अधिक आनंददायक होता है। शैली संबंधी जो विशेषताएँ हमें साहित्य की अन्य विधाओं में प्राप्त होती है। प्रायः वे सभी छायावादी कवियों के पत्रों में भी मिलती हैं। हम कह सकते हैं कि छायावादी कवियों के पत्र–साहित्य में, अपने पूर्ववर्ती और परवर्ती पत्र–साहित्य की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक नवीनता और विविधता दृष्टिगत होती है।

संदर्भ :

1. सिंह, कुँवर सुरेश संपा॰, पंत और कालाकाँकर, (1982), हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृष्ठ–104
2. शर्मा, डॉ॰ रामविलास, निराला की साहित्य साधना–3 (1976), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–312
3. द्विवेदी, डॉ॰ रामशंकर संपा॰, विष्णु पद रोड गया (पं॰ मोहनलाल वियोगी के पत्र), (2004), रामकृष्ण प्रकाशन, विदिशा, मध्यप्रदेश, पृष्ठ–74
4. प्रसाद, रत्नशंकर व त्रिपाठी, गिरिशचंद्र संपा॰, प्रसाद के नाम पत्र (प्रेमचंद का 1.10.1934 का पत्र), (1976), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृष्ठ–62
5. सुमन, रामनाथ, छायावाद युगीन स्मृतियाँ (जुलाई 1928 में लिखा महादेवी का पत्र), (1975), मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लि॰, पृष्ठ–154
6. शास्त्री, जानकीवल्लभ संपा॰, निराला के पत्र, (1971), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली–पटना, पृष्ठ–155
7. जोशी, जीवन प्रकाश, अँचल पत्रों में (1971), सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–17
8. बच्चन, हरिवंश राय संपा॰, पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम, (1970), सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–77
9. वही, पृष्ठ–220
10. शास्त्री, जानकीवल्लभ संपा॰, निराला के पत्र, 20.12.38 का पत्र, पृष्ठ–161
11. त्रिपाठी, जयनाथ मणि संपा॰, अंचल भारती (त्रैमासिक), अंक–67, (जुलाई–सितंबर, 1996), पृष्ठ–42
12. शास्त्री, जानकीवल्लभ संपा॰, निराला के पत्र, पृष्ठ–78
13. जोशी, जीवन प्रकाश, अंचल पत्रों में, पृष्ठ–29
14. द्विवेदी, डॉ॰ रामशंकर संपा॰, विष्णुपद रोड गया (पं॰ मोहनलाल वियोगी के पत्र), पृष्ठ–61
15. प्रसाद, रत्नशंकर, त्रिपाठी, गिरिशचंद्र संपा॰, प्रसाद के नाम पत्र, पृष्ठ–146
16. बच्चन, हरिवंश राय संपा॰, पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम, पृष्ठ–108
17. वही, पृष्ठ–241
18. वही, पृष्ठ–109
19. शास्त्री, जानकीवल्लभ संपा॰, निराला के पत्र, पृष्ठ–144
20. वही, पृष्ठ–253
21. वही, पृष्ठ–121
22. बच्चन, संपा॰, कवियों में सौम्य संत (9.3.60 का पत्र), (1960), राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली
23. पंत जी और कालाकाँकर (कुँवर सुरेश सिंह के नाम पंत के पत्र), पृष्ठ–208
24. द्विवेदी, रामशंकर संपा॰, विष्णुपद रोड गया (पं॰ मोहनलाल वियोगी के पत्र), पृष्ठ–31
25. शास्त्री, जानकीवल्लभ संपा॰, निराला के पत्र, पृष्ठ–100
26. शर्मा, रामविलास, निराला की साहित्य साधना–3, पृष्ठ–74, 76, 102